IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल उपन्यास के बदलते जीवन मूल्यों का चित्रण''

नीलम मेवार

शोधार्थी (हिन्दी साहित्य)

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सार

उपन्यास एक लोकप्रिय विधा है। वह बच्चों का मनोरंजन करने के साथ-साथ दिशा-निर्देशन भी करती है। उपन्यास यदि जीवन का चित्र है तो बाल उपन्यास में भी बालक के चतुर्दिक परिव्याप्त सम्पूर्ण परिवेश का चित्र आना ही चाहिए। इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। रहस्य-रोमांच की दुनिया। किशोरवय के बच्चे साहसिक और रोमांचक कारनामों से भरे उपन्यास खूब पसन्द करते हैं ये उपन्यास बच्चों का मनोरंजन तो करते ही हैं, उन्हें जीवन मूल्यों से जोड़ते भी हैं। उपन्यास में जीवन की सम्पूर्णता का चित्रण होता है, क्योंकि इसमें मानव जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंगों को कथानक का आधार बनाकर उसका ताना-बाना बुना जाता है।

शोध प्रपत्र-

इस प्रकार इस साहित्यिक विधा में उपन्यासकार अपने विचारों को गौण सृष्टि प्रदान करता है। बाल उपन्यास के पिछले 100 वर्षों के इतिहास में ऐसे सौ उपन्यास ढूँढना भी मुश्किल है, जिन्हें सच में बच्चों के दिल में उतरने और उनसे दोस्ती कर लेने वाले उपन्यास कहा जा सकता है। यह आश्चर्य तब और बढ़ जाता है जब हम देखते हैं कि बच्चों के लिए उपन्यास लिखने वालों में प्रेमचन्द्र, अमृतलाल नागर, कृष्ण चन्द, शैलेश मटियानी, मनोहर श्याम जोशी, भगवती शरण उपाध्याय, मन्नू भण्डारी, लक्ष्मीनारायण लाल, ऐसे लेखक भी शामिल हैं। आज भी हम देखें तो बालक के चारों ओर व्याप्त जानकारियों से ही बाल उपन्यास परिपूरित होता है, मनुष्य जीवन की छवि ही बाल उपन्यास पर पड़ती है। बालक के मन को पढ़कर अपनी चंचलता, मौलिकता, स्वतंत्रता के बीच कौतुक को भी संवारना पड़ता है।

''हिन्दी के बाल उपन्यासों के उद्भव के सम्बंध में डॉ॰ हरिकृष्ण देवसरे ने लिखा है- ''वास्तव में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व हिन्दी में बाल उपन्यास लिखने की ओर लेखकों का ध्यान नहीं गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस दिशा में काफी प्रगति हुई। यह काम आरम्भ हुआ पत्र-पत्रिकाओं में धारावाहिक प्रकाशन से पत्रिकाओं में रोचक उपन्यासों को धारावाहिक रूप में प्रकाशित करने से, उनकी आगे की कथा पढ़ने के लिए पाठकों में उत्सुकता होती है, जिससे पत्रिका की बिक्री बढ़ती है। सन् 1952 में बाल सखा में एक अत्यन्त रोचक बाल उपन्यास प्रकाशित हुआ था, इसके लेखक भूपनारायण दीक्षित थे। ''स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही हिन्दी बाल उपन्यास का लेखन प्रारम्भ हुआ। 1952 में प्रकाशित भूपनारायण दीक्षित के 'खड्खड्देव' नामक उपन्यास से पूर्व किसी बाल उपन्यास का नामोल्लेख डॉ॰ देवसरे ने नहीं किया है।''[1] इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए बाद के समीक्षकों ने 'खड्खड्देव' के हिन्दी का बाल उपन्यास मान लिया है।

''डॉ॰ हरिकृष्ण देवसरे एवं उनके मत पर आधृत डॉ॰ रोहिताश्व अस्थाना का कथन प्रमाणिकता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता क्योंकि 'बाल सखा' एवं 'बाल विनोद' में इससे पूर्व भी धारावाहिक बाल उपन्यास प्रकाशित हुए थे। इन पत्रिकाओं की पुरानी फाइलों में 'खड्खड्देव' से पूर्ववर्ती चार बाल उपन्यास मुझे दृष्टिगत हुए।

सन् 1944-45 में प्रकाशित ठाकुरदत्त मिश्र का बाल सखा नामक पत्रिका जिसमें 'हीरों का दीप' एक साहसिक बाल उपन्यास है। धर्मवीर का बाल उपन्यास 'बालक प्रेम और परियाँ' जो 'बाल सखा' में ही वर्ष 1946 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में तीन बच्चे एवं उनका एक कुत्ता मानवीय जगत के तथा परियाँ अलौकिक जगत की पात्र हैं।

वर्ष 1946 में 'बाल सखा की वार्षिक अंक में प्रकाशित उपन्यास 'कनक' में शैतानों के पंजे में रहस्या एवं रोमांच से परिपूर्ण है।

श्री विनोदी दादा के नाम से वर्ष 1946 में ही हास्यपरक उपन्यास 'टिल्लू-बिल्लू' 'बाल विनोद' में प्रकाशित हुआ।''[2]

बाल उपन्यास स्वतंत्रता से पूर्व के हैं, जो अत्यन्त रोचक व महत्वपूर्ण है। जबकि 'खड्खड्देव' स्वतंत्रता केबाद की रचना है, जो वर्ष 1952 में प्रकाशित हुई।

हीरों के दीप-

ठाकुरदत्त मिश्र का यह रोचक बाल उपन्यास रोमांचकारी और साहसिक घटनाओं से भरपूर है। इसमें सुरेश, नरेश और रतन, नामक तीन मित्रों के हीरों के दीप की खोज में निकलने और मालामाल हो जाने की चाह का वर्णन है। घटनाक्रम में अलौकिक घटनाएँ भी जुड़ती जाती हैं।

बालक प्रेम और परियाँ-

धर्मवीर का यह बाल उपन्यास, तीन बच्चों की कहानी है, जिनके नाम है योगेन्द्र, वेदी और मधु।

टिल्लू-बिल्लू-

'बाल विनोद' के फरवरी 1946 अंक के धारावाहिक रूप में प्रकाशित टिल्लू बिलू के रचयिता विनोदी दादा थे। यह उपन्यास कल्पनालोक की घटनाओं, पत्रों आदि का चित्र न होकर दो बच्चों की शरारतों का पिटारा है, इसमें बड़े दिन की छुट्टियों के बाद टिल्लू-बिल्लू का शहर जाना वर्णित है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पं. भूपनारायण दीक्षित के वर्ष 1952 में प्रकाशित 'खड्खड्देव' से पहले भी बच्चों के लिए अनेक रोचक उपन्यास लिखे जा चुके थे।

''स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी बाल उपन्यासों में विषय और शिल्प दोनों स्तरों पर नयापन है। परियों, दानवों, राजा-रानी और जादूगरी की कल्पना के सतरंगी वैभव से हिन्दी के नए बाल उपन्यास मुक्त हो चुके हैं। आधुनिक जीवन का स्पन्दन और आधुनिकता बोध का कलगान उसमें समाहिक है।, कभी ये बदलते जीवन मूल्यों की झलक दिखाते है, कभी शैक्षिक परिवेश में बदलाव का चित्रांकन करते हैं और कभी परिवर्तित जीवन और समाज के नाना रूपों की झाँकी उकेरते है। इसी नव्यबोध को कसौटी पर स्वातंत्र्योत्तर बाल उपन्यासों का परीक्षण आवश्यक है।

बाल मनोविज्ञान-

बाल मनोविज्ञान एक नवीन चिन्तन दृष्टि है। इसका अधुनातन रूप इसी बात से प्रकट है कि वर्ष 1969 में प्रकाशित हुए। डॉ॰ देवसरे ने हिन्दी बाल उपन्यास को विषय वस्तु के आधार पर छः भागों में बाँटा है। ऐतिहासिक, भौगोलिक, यात्रा समबन्धी, साहसिक, वैज्ञानिक, जासूसी।''[3]

बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए हिन्दी में अभी भी बहुत कम बाल उपन्यास मिलते हैं। इस क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाम है- उषा यादव। उन्हें बाल मनोविज्ञान की गहन परख है, बच्चो के मन में प्रविष्ट होकर उसके हृदय में उठने वाले भावों को समझने-पहचानने में अपूर्व दक्षता मिलती है। 'पारस पत्थर उपन्यास में ही उषा जी ने बालमन का गहन विश्लेषण किया है।

बदलते जीवन मूल्यों का चित्रण-

''कभी प्रेम, सेवा, सहयोग, सत्यनिष्ठा और अहिंसा जैसे जीवन मूल्यों की चमक विद्यमान थी। आज यह चमक फीकी पड़ गई है। स्वार्थपरता आज के जीवन में इतनी अधिक हावी हो गई है कि अपने क्षुद्र स्वार्थ की खातिर भाई-भाई का गला काटने को तत्पर है। बढ़ती हुई हिंसा के परिवेश में लोग भूल ही

गए हैं कि अहिंसा के अस्त्र द्वारा ही कभी गांधी जी ने देश को आजाद कराया था। विशेषकर किशोरवय के बच्चों की तो हिंसा और रक्तपात में बहुत ज्यादा रुचि जाग गई है। पत्रिका का एक अंक में तीन-तीन धारावाहिक उपन्यास तक प्रकाशित होते हुए देखे जा सकते हैं। यह जीवन मूल्यों के बदला का प्रमाण है। ''उपर्युक्त धारावाहिक उपन्यासों में वीरता, साहस, रोमांच, विज्ञानपरकता आदि की उपस्थित के बावजूद जीवन मूल्यों के ध्वंस को स्पष्टतया देखा जा सकता है।''[4]

जीवनमूल्यों का मानवतावादी दृष्टिकोण 'रहमान भाई' में है और निश्चित रूप से आज की विध्वंस और विघटनकारी चिंगारियों के बीच मानवतावाद का यह मरहम बहुत मूल्यवान है, जीवन मूल्यों की परिवर्तनशीलता के इस संक्रान्ति युग में बच्चे सबसे ज्यादा दिग्भ्रमित है उषा यादव के 'नन्हा दधीचि' बाल उपन्यास में जीवन मूल्यों की धूप-छाँही सौन्दर्य-सुषमा सर्वत्र परिव्याप्त है। प्रदर्शन की चाह ने आज हमारे पारम्परिक जीवन मूल्यों को बिल्कुल बदल दिया है, पहले बाहरी रहन-सहन बदलता है और फिर उसमें अन्तर्निहित मूल्यवत्ता भी बदल जाती है। 'पारस पत्थर' में उषा यदव ने मूल्यों के टकराव का सुन्दर चित्र खींचा है। निश्चय ही उषा यादव के बाल उपन्यासों में जीवन-मूल्यों के विधि रंग अपनी पूरी खूबसूरती के साथ उजागर हुए हैं, जीवन मूल्यों के बदलाव को उन्हांेने बहुत बारीकी से देखा और अपनी समर्थ लेखनी के द्वारा चित्रित किया है।

शैक्षिक परिवेश में बदलाव-

''शिक्षा आजीवन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। पर जब शिक्षा का अर्थ पुस्तकीय पढ़ाई मान लिया जाता है। तो बच्चों पर नाना भाँति के प्रतिबन्ध लगाए जाते हैं तथा सभी विषयों को पढ़ो होम-वर्क करो, पढ़ाई में अधिकाधिक ध्यान लगाओ। तब पढ़ाई और समय एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। यह पढ़ने का समय है। यह खेलने का और टेलीविजन देखने का आदि पर इस नियमबद्धता से बच्चे के स्वाभाविक विकास में कितनी बाधा पड़ती है, रमेश थानवी ने 'घड़ियों की हड़ताल' नामक अपने बाल उपन्यास में बड़ी दक्षता से दर्शाया है। एक बार पूरे देश की घड़ियों की एक साथ हड़ताल कर देती हैं। वजह यह है कि वे बच्चों पर होने वाले अत्याचारों से दुखी है। खैरागढ़ की घड़ियों ने तो साफ-साफ फैसला कर लिया है। ''जब तक बच्चों की मुस्कान नहीं लौटाई जाती, तब तक घड़ियाँ बन्द रहेंगी।''[5]

इस प्रकार रमेश थानवी ने अपने उपन्यास 'घड़ियों की हड़ताल' में शैक्षिक परिवेश में बदलाव लाने की आवश्यकता पर बल दिया और सच तो यह है कि बदलाव आया भी है, अनेक कोणों में परिवर्तन की यह लहर दृष्टिगत हो रही है। छोटे बच्चों के लिए 'खेल-खेल में सीखना' की पद्धति प्रचलित है। बड़े बच्चों के मनोरंजन और स्वस्थ विकास के लिए विद्यालय में खेल के मैदान आदि होते हैं। इस बदले हुए शैक्षिक माहौल ने आज बच्चे से उसका 'बचपन' छीन लिया है। बचपन की मस्ती और निश्चित जीवन छीन लिया है। उषा यादव ने हीरे का मोल'

में इसी स्थिति का चित्रण किया है। शैक्षिक परिवेश की बात चलने पर गाँवों की पाठशालाओं को भूलने से काम न चलेगा। शहरों की चमक-दमक वाली शिक्षण संस्थाओं से इतर गाँव के स्कूल अपनी दुर्दशा की जीती-जागती कहानी होते हैं। स्पष्ट है कि शैक्षिक परिवेश में आए बदलाव का आज के बाल उपन्यासों में यथातथ्य चित्रण हुआ है।

परिवर्तित जीवन एवं समाज के नाना रूपों क चित्रण-

''आज के सामाजिक सरोकार को लेकर यथेष्ट मात्रा में बाल उपन्यास लिखे गए हैं, पण्डित अमृत लाल नगार के उपन्यास हैं, 'बजरंगी नौरंगी', 'बजरंगी पहलवान' तथा 'बजरंगी स्मग्लरों के फन्दे में' है। इन तनों उपन्यासों में बजरंगी और नौरंगी नामक दो भाईयों के कारनामे वर्णित हैं, बड़ा भाई बजरंगी पहलवान है और छोटा नौरंगी चतुर जादूगर है, पहले उपन्यास, बजरंगी-नौरंगी में दोनों भाई मिलकर एक चीनी दानव 'फेनफू' और उसके पहलवानों को हराते हैं, दूसरे उपन्यास 'बजरंगी पहलवान' में दोनों भाई दो बदमाशों के आतंक से कुबेरपुर रियासत को मुक्त करके सबकी वाहवाही लूटते हैं, तीसरा उपन्यास दोनों भाईयों के स्मग्लरों के फन्दे में फँसने और बुद्धिबल से वहाँ से बाहर निकलने का चित्र है, इन तीनों उपन्यासों में रहस्य-रोमांच और हास्य की छटा है। नरेन्द्र कोहली का 'हम सबका घर' प्रदूषण ओर पर्यावरण की समस्या को लेकर लिखा गया बाल उपन्यास है। हम अपना घर तो साफ करते हैं पर कूड़ा गली में फैंक देते हैं। फलस्वरूप वायु विषाक्त होती है। उसका प्रभाव हम सब पर पड़ता है। यह पृथ्वी हमारा घर है, हम सबका घर इसके पर्यावरण की शुद्धता के प्रति सचेष्ट रहना हमारा कर्तव्य है। बच्चों के जीवन संसार और समाज के नाना रूपों को लेकर ढेरों बाल उपन्यास लिखे गए हैं। इनमें सबसे बड़ी संख्या रहस्य रोमांचपरक उपन्यासों की है। उपन्यास में एक निर्धन व अनाथ बालक जानू की वीरता और साहस का चित्र है।

आज के परिवर्तित समाज और जीवन की झाँकी दिखाने वाले बाल उपन्यास और भी है। राधेश्याम 'प्रांगल्म' का ''शाही हकीम' मानवता, भ्रसतृत्व और सहयोग की बात सिखाता है। श्री प्रसाद का 'शाबास श्यामू' भी आज के जीवन का चित्र है। मनोहर वर्मा के उपन्यासों में यथार्थ एवं कल्पना का सुन्दर समन्वय है। कहीं-कहीं हास्य की मीठी फुहार भी है। उनके उपन्यासों के नाम है।, 'हम सब एक हैं', बचपन का मोल', 'पिलपिली बाहदुर', 'सोन बाला' और बौने 'मधु' 'लोहासिंह' व 'एक भी चुहिया' शंकर सुल्तानपुरी के पचास से अधिक बाल उपन्यासों में कुछ प्रमुख के नाम हैं- 'मामा खैराती लाल', 'मिट्टी की राजकुमारी', 'किस्सा पोपटलाल का', 'पत्थर का पुतला', 'अन्तरिक्ष यात्रा'।''[6]

डॉ॰ रोहिताश्व अस्थाना ने भी मौलिक बाल उपन्यास लिखे हैं, इनके नाम 'स्वप्नलोक' (सोनू की उड़ान), 'काफिले का सूरज' तथा 'बच्चों की वापसी', पहला उपन्यास 'स्वप्नलोक' ही बाद में कुछ अधिक चित्रों से सजकर 'सोनू की उड़ान' के नाम से वर्ष 1987 में प्रकाशित हुआ। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि परिवर्तित जीवन एंव समाज के नाना रूपों के चित्रण ने हिन्दी बाल उपन्या के सौन्दर्य संवर्द्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बाल मनोविज्ञान, जीवन मूल्य, शैक्षिक परिवेश एवं सामयिक जीवन के सन्दर्भ को लेकर भी श्रेष्ठ बाल उपन्यस लिखे गए हैं, चूँकि उपन्यास आज की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। अतः इस क्षेत्र में और अधिक संख्या में रचनाएँ प्रतिक्षित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1- सिंह कामना, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी, बाल उपन्यास, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2012, पृ. 135

2- वही, पृष्ठ क्रमांक- 136

3- वही, पृष्ठ क्रमांक- 137

4- वही, पृष्ठ क्रमांक- 138

5- वही, पृष्ठ क्रमांक- 114-149

6- वही, पृष्ठ क्रमांक- 151-153